

Padma Bhushan



HIS HOLINESS TRIDANDI CHINNA JEEYAR SWAMIJI

His Holiness Tridandi Chinna Jeeyar Swamiji, is the senior most Sanyasi of the highest order of the Tenkalai Srivaishnava Tradition of Vedic lineage.

2. Born on 3rd November, 1956 in Andhra Pradesh, Shri Swamiji was immensely inspired by a great freedom fighter turned Sanyasi, Shri Pedda Jeeyar Swamiji and learned under a great scholar, “Nyaya Vedanta Vidwan” Sriman T. K. Gopalacharya Swami.

3. Shri Swamiji took sanyas in 1980 and at the young age of 23, seamlessly continued to carry on the vision of the Vaishnava lineage of Sri Ramanujacharya, expanding the outreach to encompass countries abroad. His profound scholarship and incessant innovative noble activities began invigorating millions of devoted volunteers from all sections of the society, all around the world.

4. With the motto, Worship Your Own...Respect All, Shri Swamiji, began activities to keep alive traditional, time tested Vedic values, that would help people in this fast paced 'modern' society. These activities included setting up of a Vedic University in which traditional methods of oral teaching are integrated with essentials of modern education, digitalization of and research in Vedas and related scriptures, renovation and protection of ancient Vedic temples and their systems, organising Grand Yajnas for the welfare of the country and the world, motivating masses with practical implementation of morals and spiritual glories through his exquisite profound scholarship filled lucid discourses on Sri Bhagavad Githa, Sri Ramayana, Divya Prabandhas, Vedanta etc. on TV and other media.

5. Shri Swamiji has inspired his millions of devoted volunteers, from all walks of life for serving society through his Social Service Wing Vikasa Tarangin. He has instilled in them the motto, Serve All Beings As Service To God. Wherever...whenever...there is a need...you will find Chinna Jeeyar there.... sharing and caring. Some examples of these services are conducting Pada Yatras to motivate people in difficult times and providing material or financial relief during natural calamities like cyclones, earthquakes and tsunami in coastal areas, Gujrat and Nepal or man made calamities like the Kargil war, During the COVID 19 pandemic, free health services were provided by Swamiji's medical wings, Since 2010, 1.9 million rural and urban women have been provided free screening for cervical & breast cancer. More than 3 lakh women, detected with malignancy, have been counseled and given free treatment by the volunteer doctors, Schools and colleges have been set up to impart free, computer aided education to visually challenged children and to those in remote tribal areas, Jeeyar Educational Trust has branches all over the world. Thousands of children abroad are being motivated to volunteer for social service in those countries. They are also being systematically taught Indian culture and heritage that glorifies humanity in every aspect of life.

6. Shri Swamiji is a promoter of world peace and harmony through Sri Ramanujacharya's concept that 'All souls are equal in the eyes of God'. The inspiring Statue of Equality, Hyderabad, inaugurated in 2022 stands testimony to this. He is a blend of ancient Vedic Wisdom and Practice, scientific knowledge and modern outlook.



श्री श्री श्री त्रिदण्डि चिन्न जीयर् स्वामीजी

श्री श्री श्री त्रिदण्डि चिन्न जीयर् स्वामीजी, वैदिक परंपरा की तेनकलाई श्रीवैष्णव शाखा के सर्वोच्च क्रम के वरिष्ठतम सन्यासी हैं।

2. 03 नवंबर, 1956 को आंध्र प्रदेश में जन्मे, श्री स्वामीजी पर महान स्वतंत्रता सेनानी से संन्यासी बने, श्री पेड्डा जीयर् स्वामीजी का बहुत प्रभाव पड़ा और उन्होंने प्रकांड विद्वान, “न्याय वेदान्त विद्वान” श्रीमन् टी.के. गोपालाचार्य स्वामी से शिक्षा ग्रहण की।

3. श्री स्वामीजी ने 1980 में संन्यास ग्रहण किया और 23 वर्ष की अल्पायु में ही श्री रामानुजाचार्य के वैष्णव संप्रदाय के सिद्धांतों का निरंतर प्रचार—प्रसार करने लगे और इन्हें विश्व के अन्य देशों तक पहुंचाया। उनकी अगाध विद्वत्ता और अनवरत नए—नए सत्कार्यों से पूरे विश्व के सभी वर्गों के लाखों अनुयायियों में उत्साह का संचार होने लगा।

4. अपने धर्म का पालन करें सभी धर्मों का सम्मान करें के आदर्श के साथ, श्री स्वामीजी ने पौराणिक और समयसिद्ध वैदिक मूल्यों को जीवंत रखने के लिए कार्य शुरू किया, जिससे वे तेजी से परिवर्तनशील ‘आधुनिक समाज’ में लोगों के लिए सहायक बनें। इन कार्यों में, एक वैदिक विश्वविद्यालय की स्थापना, जहां वाचिक शिक्षा की पारंपरिक पद्धतियों को आधुनिक शिक्षा के मूलभूत पहलुओं के साथ समेकित किया गया, वेदों और उससे संबंधित शास्त्रों का डिजिटलीकरण और उन पर अनुसंधान, प्राचीन वैदिक मंदिरों और उनके प्रबंधन का पुनरुद्धार और संरक्षण, देश और विश्व कल्याण के लिए विराट यज्ञों का आयोजन, टीवी और मीडिया पर विद्वत्पूर्ण और सुबोध प्रवचनों द्वारा श्री भगवद्गीता, श्री रामायण, दिव्य प्रबंधों, वेदांत आदि की नैतिक और आध्यात्मिक महिमा की व्यावहारिकता के द्वारा जनमानस को प्रेरित करना शामिल है।

5. श्री स्वामीजी ने अपने सामाजिक सेवा संस्था विकास तरंगिन के माध्यम से समाज सेवा के लिए जीवन के सभी क्षेत्रों के लाखों समर्पित स्वयंसेवकों को प्रेरित किया है। उन्होंने स्वयंसेवकों में यह संस्कार संचारित किया है कि सभी प्राणियों की सेवा को ईश्वर की सेवा समझो। जहां भी ... जब भी ... आवश्यक होगा ... चिन्नाजीयर् तुम्हारी चिंताओं को साझा करने और तुम्हारी सहायता के लिए तुम्हारे साथ होंगे। विकट समय में लोगों को प्रेरित करने के लिए पद यात्राएं करना और तटीय क्षेत्रों, गुजरात और नेपाल में चक्रवात, भूकंप और सुनामी जैसी आपदाओं अथवा कारगिल युद्ध जैसे मानव—जनित आपदाओं के दौरान सामान या वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना ऐसी ही सेवाओं के कुछ उदाहरण हैं। कोविड—19 महामारी के दौरान, स्वामीजी के चिकित्सा संगठन द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गईं। वर्ष 2010 से, 19 लाख ग्रामीण और शहरी महिलाओं की निःशुल्क सर्वाइकल और स्तन कैंसर जांच की गई है। इन जांच में कैंसर लक्षण ग्रस्त 3 लाख से अधिक महिलाओं को स्वयंसेवी चिकित्सकों द्वारा परामर्श और निःशुल्क चिकित्सा प्रदान की गई है। दृष्टि बाधित बच्चों और सुदूर जनजातीय क्षेत्रों के बच्चों को कम्प्यूटर युक्त निःशुल्क शिक्षा देने के लिए विद्यालय और महाविद्यालय बनाए गए हैं। जीयर् एजुकेशनल ट्रस्ट की शाखाएँ पूरे विश्व में हैं। विदेशों में हजारों बच्चों को उन देशों में समाज सेवा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्हें जीवन के प्रत्येक पक्ष में मानवता का सम्मान करने वाली भारतीय संस्कृति और विरासत की शिक्षा व्यवस्थित प्रकार से दी जा रही है।

6. श्री स्वामीजी, श्री रामानुजाचार्य के ‘ईश्वर की दृष्टि में सभी समान हैं’ के विचार के द्वारा विश्व शांति और सद्भाव को बढ़ावा देते हैं। 2022 में उद्घाटन किया गया प्रेरक स्टैच्यू ऑफ इक्वैलिटी, हैदराबाद इसका प्रमाण है। उनका व्यक्तिव पुरातन वैदिक मनीषा और व्यवहार, विज्ञान और आधुनिक दृष्टिकोण का संगम है।